



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

The Savera Times

16.10.2024

---

--

# Agriculturists focus scopes for spice cultivation to mint money

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University  
Newspaper

**Hisar:** A group of experts at a seminar in Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University on Tuesday agreed that there is a need to work more on spice cultivation from nursery to field and processing after production. In his address as Chief Guest, Deputy Director General (Horticulture) of Indian Council of Agricultural Research, Dr. SK Singh said by cultivating spice crops farmers can earn more profit than other crops. Farmers, he said, need to be motivated to form groups and do farming with the help of FPOs. Due to changes in the

climate, planning should be done according to agro-climatic zones, said Dr Singh adding that cultivation of improved varieties will give more benefits. He said that along with increasing production, attention should also be paid to the quality of spices so that the use of spices does not cause any harm to health. ICAR has set up a spice factory in Kozhikode and Ajmer National level institutes of this are working, he said and called for making farmers aware to promote natural farming in the cultivation of spices. Sharing the information, he said that recently, crops that are tolerant to climate change

and give higher yield have been developed, 109 varieties were released of which 6 varieties were of spice crops. In his address, the Vice Chancellor of the University, Professor DR Kamboj said spices not only add taste and flavour to our food but also enhance the quality and medicinal values of food. India is the largest producer, consumer and exporter of spices and spice products, he said adding that Indian spices are famous for their flavours in the world. "India has the most spices due to its diverse agro-climatic zones. Out of the total 63 spices grown in India, 20 are classified as seed spices whose dried seeds or fruits

### All India Coordinated Spices Research Project meeting underway at HKU

are used as spices and they cover about 45 per cent area and 50 per cent of the country's total area. They contribute 18 per cent of the total spice production," he said.

According to him, there is need to formulate strategies to ensure national food and nutrition security by highlighting the challenges of the spice industry, which include declining productivity, soil health

issues, microbial mobility, climate change, food safety challenges, increasing problem of adulteration in spices are included. He emphasized on working in coordination to deal with various challenges including climate change. He said in this three-day meeting, the next 15 years related to spices will be discussed. A road map will be prepared for this. To achieve the ambitious target of doubling the income of

farmers, there is a need to emphasize the imperative of increasing the profit for farmers by identifying successful crop varieties. The 3-day deliberations will help experts from various fields to give bright suggestions for future studies and research initiatives in spices. In the program, Dr. N Krishna Kumar, Dr. VA Parthasarathy, Dr. Sudhakar Pandey, Director of ICAR-ISR, Dr. R. Dinesh and Director of National Seed Spices Research Centre, Dr. Vinay Bhargava also spoke about ways to increase the production of spice crops. He expressed his views in this regard. Apart from releasing books published from

different parts of the country, participants who did remarkable work were also honoured. On this occasion, the AICRP Centre of Hisar Agricultural University was honoured with the Best Centre Award. Research Director Dr. Rajbir Garg welcomed the guests and elaborated the various topics related to the production and research of spices. Head of the Department of Vegetable Science, Dr. S.K. Tandan welcomed all the scientists and officers who had come to the program. On this occasion, Deans, Directors, Officers, Heads of Departments and Scientists of all the colleges were present.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	16-10-24	4	2-5

# दैनिक जागरण

## मसाले वाली फसलों की खेती कर अधिक मुनाफा कमा सकते किसान : डा. एसके सिंह

अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक में 40 केंद्रों से पहुंचे विज्ञानी

जागरण संवाददाता • हिसार: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक (बागवानी) डा. एसके सिंह ने कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है, ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। वह मुख्य अतिथि के रूप में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक में बोल रहे थे। इसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डा. एन कृष्णा कुमार, डा. वीए पार्थासारथी व एडीजी डा. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान कोझीकोड



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय बैठक में मुख्यातिथि डा. एसके सिंह, कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज सहित अन्य अधिकारी पुस्तक का विमोचन करते हुए।

### भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध: कुलपति

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से,

कालीकट केरल द्वारा संयुक्त रूप से यह बैठक आयोजित की जा रही। बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

डा. एसके सिंह ने कहा कि

भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। 63 मसालों में से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया है जिनके सूखे बीज का उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है। वे देश के 45 प्रतिशत क्षेत्र और कुल मसाला उत्पादन का 18 प्रतिशत हिस्सा योगदान करते हैं। प्रो. काम्बोज ने कहा कि मसालों के उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए आधुनिक तकनीक को अपनाना बहुत जरूरी है।

जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ मसालों की गुणवत्ता पर भी ध्यान

देने की जरूरत है ताकि मसालों के उपयोग से स्वास्थ्य में कोई हानि न हो। आइसीएआर के कोझीकोड और अजमेर में मसालों के राष्ट्रीय स्तर के संस्थान कार्यरत हैं। उन्होंने मसालों की खेती में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया गया था जिसमें 6 किस्मों मसाले वाली फसलों की थी। कार्यक्रम में डा. एन कृष्णा कुमार, डा. वीए पार्थासारथी, डा. सुधाकर पांडे, आइसीएआर-आइआइएसआर के निदेशक डा. आर. दिनेश व राष्ट्रीय बीजिय मसाला अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डा. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे। इस दौरान नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के एआईसीआरपी सेंटर को बेस्ट सेंटर के अवार्ड से नवाजा गया। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने विस्तार से प्रकाश डाला। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एसके तेहलान ने सभी का धन्यवाद किया। मंच का संचालन श्वेता ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	16.10.24	9	2.8

हकृति में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक

# मसाले वाली खेती से अधिक मुनाफा कमा सकते हैं किसान

हरिभूमि न्यूज ॥ हिंसार

डॉ. गर्ग ने शोध पर डाला प्रकाश

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजवीर गर्ग ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए मसालों के उत्पादन एवं अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान व श्वेता ने आभार व्यक्त किया।

संबोधित करते हुए कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने कि जरूरत है। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ मसालों की गुणवत्ता पर भी ध्यान देने की



हिसार। पुस्तक का विमोचन करते उप-महानिदेशक डॉ. एसके सिंह, वीसी प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य।

जरूरत है ताकि मसालों के उपयोग से स्वास्थ्य में कोई हानि न हो। आईसीएआर के कोझीकोड और अजमेर में मसालों के राष्ट्रीय स्तर के संस्थान कार्यरत हैं। उन्होंने मसालों की खेती में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील व अधिक उत्पादन वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया था जिसमें 6 किस्में मसाले वाली फसलों की थीं।

**उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रतिभागियों किए सम्मानित**

उन्होंने बताया कि तीन दिनों के विचार-विमर्श से विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को

भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। भारत में उगाए जाने वाले कुल 63 मसालों में से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया गया है जिनके सूखे बीज या फलों का उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है और वे देश के लगभग 45 प्रतिशत क्षेत्र और कुल मसाला उत्पादन का 18 प्रतिशत हिस्सा योगदान करते हैं। उन्होंने बताया कि इस तीन दिवसीय बैठक में मसालों से संबंधित आगामी 15 वर्षों का रोड मैप बनाया जाएगा। किसानों की आय को दोगुना करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के लिए सफल फसल किस्मों की पहचान करके किसानों के लिए लाभ को बढ़ाने की अनिवार्यता पर जोर देने की आवश्यकता है।

मसालों में भविष्य के अध्ययन और अनुसंधान पहलों के लिए उज्वल सुझाव देने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम में डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पार्थासारथी, डॉ. सुधाकर पांडे, आईसीएआर-आईआईएसआर के निदेशक डॉ. आर.दिनेश व राष्ट्रीय बीजोद्यम मसाला अनुसंधान के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे। कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन करने के अतिरिक्त उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के एआईसीआरपी सेंटर के बेस्ट सेंटर के अवार्ड से नवाजा गया।

मुख्यातिथि डॉ. एसके सिंह ने बैठक को



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अज्ञात समाचार	16-10-24	5	1-5

# मसाले वाली फसलों की खेती करके अधिक लाभ कमा सकते हैं किसान : डा. एस.के. सिंह

हिसार, 15 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ हुआ, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पाथारिस्थी व एडीजी डॉ. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सज्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। मुख्यातिथि डॉ. एसके सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए



मुख्यातिथि पुस्तक का विमोचन करते हुए।

कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने कि जरूरत है। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से

अधिक लाभ मिलेगा। हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया गया था जिसमें 6 किस्में मसाले वाली फसलों की थीं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों की

भूमि' के रूप में भी जाना जाता है।

भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। भारत में उगाए जाने

उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे। कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन करने के अतिरिक्त उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के एआईसीआरपी सेंटर को बेस्ट सेंटर के

### हकूति में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक का शुभारंभ

वाले कुल 63 मसालों में से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया गया है जिनके सूखे बीज या फलों का उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है और वे देश के लगभग 45 प्रतिशत क्षेत्र और कुल मसाला उत्पादन का 18 प्रतिशत हिस्सा योगदान करते हैं। कार्यक्रम में डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पाथारिस्थी, डॉ. सुधाकर पांडे, आईसीएआर-आईआईएसआर के निदेशक डॉ. आर.दिनेश व राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का

अवाई से नवाजा गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए मसालों के उत्पादन एवं अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सज्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन श्वेता ने किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	16.10.24	2	1-6

# मसालों की खेती कर किसान बढ़ा सकते हैं अपनी आमदनी : डॉ. एस्के

एचएयू में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक में वैज्ञानिकों ने साझा किए अनुभव

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एस्के सिंह ने कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर पैदावार के बाद प्रसंस्करण पर अधिक काम करने की जरूरत है। मसाले वाली फसलों की खेती कर किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं।

वे मंगलवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह की बैठक में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से भी किसानों को अधिक लाभ मिलेगा। मंगलवार को शुरू बैठक की अध्यक्षता विधि

के कुलपति प्रो. बीआर कांभोज ने की। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 केंद्रों से वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। मुख्य अतिथि ने कहा कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया गया था, जिसमें 6 किस्में मसाले वाली फसलों की थीं।

भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध : विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कांभोज ने कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतरराष्ट्रीय



एचएयू में अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक में मौजूद अधिकारी। श्रेत: शिथि

मानकीकरण संगठन (आईएसओ) द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। क्लाइमेट चेंज सहित विभिन्न चुनौतियां से निपटने के लिए उन्होंने आपसी तालमेल के साथ कार्य करने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि इस तीन दिवसीय बैठक में मसालों से संबंधित आगामी 15 वर्षों का रोड मैप बनाया जाएगा।

कार्यक्रम में डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पार्थासारथी, डॉ. सुधाकर पांडे, आईसीएआर-आईआईएसआर के निदेशक डॉ. आर दिनेश व राष्ट्रीय बीजिय मसाला अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबोर गर्ग ने मसालों के उत्पादन एवं अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

### क्या बोले वैज्ञानिक

“मसालों के अंदर बीज, पत्ता, दाना व पौधे के दूसरे हिस्सों को भी काम में लिया जाता है। काली मिर्च, कलौंजी, अजवाइन, लोंग, इलायची, काली मिर्च, तेज पत्ता, धनिया, मेथी व सौंफ समेत 18 फसलों पर बैठक में विचार किया जाएगा। इसमें से किस परिस्थिति में कौन सी फसल ज्यादा उत्पादन देता है। - डॉ. रविंद्र, सीनियर वैज्ञानिक

“अदरक और हल्दी में होने वाली बीमारियों और उनके उत्पादन पर काम कर रहे हैं। सैपल लेकर ट्रायल भी किए हैं कि कहाँ किस किस्म का उत्पादन ज्यादा हुआ है। दूसरी फसलों के साथ अदरक को कैसे उत्पादन बढ़ा सकते हैं। - डॉ. अमित, वैज्ञानिक, आईसीएआई रासी फॉर नेह रीजन, सिक्किम।



“हल्दी, धनिया, मेथी और अजवाइन की फसल पर काम कर रहे हैं। अभी तक हल्दी की 1, मेथी की तीन, अजवाइन की 3 और धनिया की 8 किस्में तैयार कर चुके हैं। इन किस्मों में कम से कम रसायनिक दवाओं का छिड़काव किया गया है ताकि फसलों की उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता में बढ़ोतरी हो। - डॉ. के गिरीधर, वैज्ञानिक, आंध्रप्रदेश।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पञ्जाब केसरी	16.10.24	4	1-4

### मसालों की खेती में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का आह्वान

हिसार, 15 अक्टूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ हुआ, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक की अध्यक्षता

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन. कृष्णा कुमार, डॉ. वी. पार्थासारथी व ए.डी.जी. डॉ. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सजी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय मसाला

अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

मुख्यातिथि डॉ. एस.के. सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ मसालों की गुणवत्ता पर भी ध्यान देने की जरूरत है ताकि मसालों के उपयोग से स्वास्थ्य में कोई हानि न हो। उन्होंने मसालों की खेती में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया।

उन्होंने जानकारी साझा करते हुए कहा कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया गया था जिसमें 6 किस्में मसालों वाली फसलों की थी।

#### भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध: प्रो. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है।

भारत में उगाए जाने वाले कुल 63 मसालों में से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया गया है जिनके सूखे बीज या फलों का उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है और वे देश के लगभग 45 प्रतिशत क्षेत्र और कुल मसाला उत्पादन का 18 प्रतिशत हिस्सा योगदान करते हैं। उन्होंने बताया कि इस तीन दिवसीय बैठक में मसालों से संबंधित आगामी 15 वर्षों का रोड मैप बनाया जाएगा।

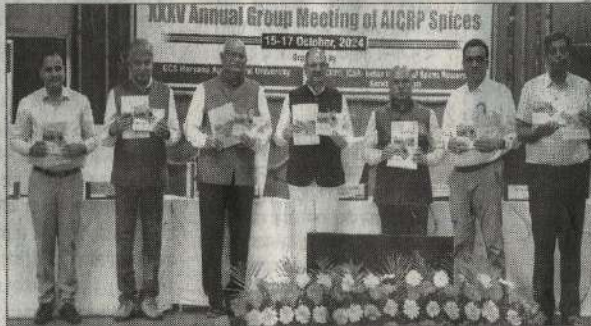
कार्यक्रम में डॉ. एन. कृष्णा कुमार, डॉ. वी. पार्थासारथी, डॉ. सुधाकर पांडे, डॉ. आर.दिनेश व राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे। इस अवसर पर नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के ए.आई.सी.आर.पी. सेंटर को बेस्ट सेंटर के अवार्ड से नवाजा गया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सत्य माह	16.10.24	6	1-5

# हकृवि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक का शुभारंभ मसालों की खेती करके किसान अन्य फसलों से अधिक कमा सकते हैं लाभ: डॉ. एसके सिंह

● देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक ले रहे भाग

हिसार(सच कहूँ/पुनीत चधवा)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मंगलवार को 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ हुआ, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पाथासार्थी व एडीजी डॉ. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



मुख्यातिथि डॉ. एसके सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। उन्होंने मसालों की खेती में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया। उन्होंने जानकारी साझा करते हुए कहा कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन के

प्रति सहनशील एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया गया था, जिसमें 6 किस्में मसाले वाली फसलों की थीं। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

**भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध: प्रो. काम्बोज**

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं, बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों

को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण मसालों की भूमि के रूप में भी जाना जाता है। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। भारत में उगाए जाने वाले कुल 63 मसालों में से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिनके सूखे बीज या फलों का उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है और वे देश के लगभग 45 प्रतिशत क्षेत्र और कुल मसाला उत्पादन का 18 प्रतिशत हिस्सा योगदान करते हैं।

**वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर कर रहे काम**

कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिक विभिन्न मसाला फसलों पर विशेष केंद्रों पर काम कर रहे हैं, ताकि प्रौद्योगिकियों में सुधार, प्रमुख मसालों में कीटनाशक अवशेषों, लेबल दावों, मशीनीकरण, मूल्य संवर्धन, उच्च मूल्य यौगिकों पर अनुसंधान की तीव्रता और उत्पादन के साथ-साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए विशिष्ट गुणवत्ता लक्षणों के साथ अच्छे कृषि प्रथाओं और किस्मों को एकीकृत किया

जा सके। उन्होंने बताया कि तीन दिनों के विचार-विमर्श से विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को मसालों में भविष्य के अध्ययन और अनुसंधान पहलों के लिए उज्वल सुझाव देने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम में डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पाथासार्थी, डॉ. सुधाकर पांडे, आईसीएआर-आईआईएसआर के निदेशक डॉ. आर.दिनेश व राष्ट्रीय बीज मसाला अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे।

**प्रतिभागियों को किया सम्मानित** कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन करने के अतिरिक्त उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नक्सारी कृषि विश्वविद्यालय के एआईसीआरपी सेंटर को बेस्ट सेंटर के अवार्ड से नवाजा गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए मसालों के उत्पादन एवं अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेहलान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन श्वेता ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	16.10.24	2	1-5

# दैनिक भास्कर

**बैठक • 35वे अखिल भारतीय मसाला अनुसंधान सम्मेलन में 40 कृषि अनुसंधान केंद्रों से पहुंचे वैज्ञानिक नवसारी कृषि विश्वविद्यालय को बेस्ट सेंटर के अवॉर्ड से नवाजा**

आईएसओ सूचीबद्ध  
109 मसालों में से 63  
का उत्पादन भारत में

भास्कर न्यूज | हिसार



हिसार | पुस्तक का विमोचन करते मुख्य अतिथि डा. एस्के सिंह व अन्य ।

**किसानों के समूह बना दें मसालों की खेती को बढ़ावा**

सम्मेलन में मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक बागवानी डॉ. एस्के सिंह ने कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से अधिक लाभ मिलेगा।

**बैठक में बनेगा 15 वर्षों का रोडमैप**

तीन दिवसीय बैठक में मसालों से संबंधित 15 वर्षों का रोड मैप बनाया जाएगा। मसाला उद्योग की चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय खाद्य और पोषण सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए रणनीति तैयार करने के लिए चर्चा होगी। इसमें उत्पादकता में गिरावट, मिट्टी की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, सूक्ष्मजीव गतिशीलता, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा चुनौतियां, मसालों में मिलावट की बढ़ती समस्याएं शामिल हैं।

अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन आईएसओ द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 का उत्पादन करता है। इनमें से 20 को बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया है। यह बात एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने 35वां अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक में कही। एचएयू के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त

आयोजित बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। वीसी ने कहा कि मसाले न केवल भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों

की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है। कार्यक्रम में नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के एआईसीआरपी सेंटर को बेस्ट सेंटर के अवॉर्ड से नवाजा गया। डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पार्थासारथी, डॉ. सुधाकर, आईसीएआर-आईआईएसआर के निदेशक डॉ. आर. दिनेश व राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में विचार रखे।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिन्दू	16.10.24	7	3-5

### मसाला फसलों की खेती से हो सकता है अधिक लाभ : उसके सिंह

हिसार, 15 अक्टूबर (हप्र)

हकूवि में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की बैठक का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ हुआ, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. उसके सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पार्थासारथी व एडीजी डॉ. सुधाकर

पांडे उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

मुख्यातिथि डॉ. उसके सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मसाले वाली फसलों की खेती करके

किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से अधिक लाभ मिलेगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण 'मसालों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है।



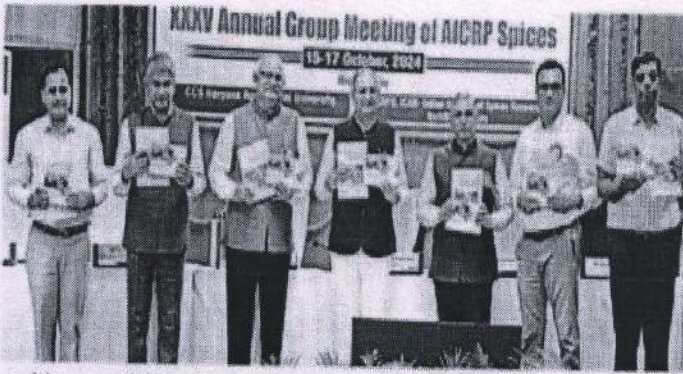
## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	16.10.2024	---	--

# मसाले उगाकर गेहू चावल की तुलना में ज्यादा मुनाफा कमा सकते है हरियाणा के किसान

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोही  
हिसार, 15 अक्टूबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वीं अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. एसके सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक को अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विंशति अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन. कृष्णा कुमार, डॉ. वीए. पार्थासारथी व एडीजी डा. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए



मुख्यातिथि पुस्तक का विमोचन करते हुए।

वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

मुख्यातिथि डॉ. एसके सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। ताकि मसालों

की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मसाले वाली फसलों को खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफएओ के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित

करने की जरूरत है। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिस्सा से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ मसालों की गुणवत्ता पर भी ध्यान देने

### भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध : कुलपति काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जलपत्र जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय गुणों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाले उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, आभोज्य और निर्यात होने के कारण 'मसालों की भूमि' के रूप में भी जाना जाता है। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध हैं।

की जरूरत है। कार्यक्रम में डॉ. एन. कृष्णा कुमार, डॉ. वीए. पार्थासारथी, डॉ. सुधाकर पांडे, आईसीए-आर-आईआईएसआर के निदेशक डॉ. आर.दिनेश व राष्ट्रीय वीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विनय भारद्वाज ने भी मसाले वाली फसलों का उत्पादन बढ़ाने के संबंध में अपने विचार रखे।

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत

करते हुए मसालों के उत्पादन एवं अनुसंधान से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सजीव विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. तेल्लान ने कार्यक्रम में आए हुए सभी वैज्ञानिकों और अधिकारियों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन श्रेष्ठ ने किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एक्शन इंडिया न्यूज	16.10.2024	---	--

### मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं: डॉ. सिंह

हिसार/टीम एक्शन इंडिया चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 35वें अखिल भारतीय सम्मिलित मसाला अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ हुआ, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप-महानिदेशक (बागवानी) डॉ. ए.एस.के. सिंह मुख्यातिथि रहे जबकि बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलापति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। विशेष अतिथि के रूप में पूर्व उप-महानिदेशक (बागवानी), डॉ. एन.कृष्णा कुमार, डॉ. वीए पाथासारथी व एडीजी डॉ. सुधाकर पांडे उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि



अनुसंधान परिषद्- केन्द्रीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, कालीकट, केरल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही इस बैठक में देश के विभिन्न राज्यों के 40 अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। मुख्यातिथि डॉ. ए.एस.के. सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए

कहा कि मसालों की खेती में नर्सरी से लेकर खेत में उत्पादन के बाद प्रसंस्करण पर और अधिक काम करने की जरूरत है। ताकि मसालों की खेती को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मसाले वाली फसलों की खेती करके किसान अन्य फसलों के मुकाबले अधिक लाभ कमा सकते हैं। किसानों को एफपीओ

के सहयोग से समूह बनाकर खेती करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। जलवायु में हो रहे परिवर्तनों के कारण एग्रो-क्लाइमेट क्षेत्रों के हिसाब से योजना बनाकर उन्नत किस्मों की खेती करने से अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ मसालों की गुणवत्ता पर भी ध्यान देने की जरूरत है ताकि मसालों के उपयोग से स्वास्थ्य में कोई हानि न हो। आईसीएआर के कोझीकोड और अजमेर में मसालों के राष्ट्रीय स्तर के संस्थान कार्यरत हैं। उन्होंने मसालों की खेती में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया। उन्होंने जानकारी साझा करते हुए कहा कि हाल ही में जलवायु परिवर्तन

के प्रति सहनशील एवं अधिक उत्पादन देने वाली फसलों की 109 किस्मों का विमोचन किया गया था जिसमें 6 किस्में मसाले वाली फसलों की थी। भारत के मसाले विश्व में अपने जायके के लिए प्रसिद्ध: प्रो. बी.आर. काम्बोज विश्वविद्यालय के कुलापति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि मसाले न केवल हमारे भोजन में स्वाद और जायका जोड़ते हैं बल्कि हमारे भोजन की गुणवत्ता और औषधीय मूल्यों को भी बढ़ाते हैं। भारत को मसालों और मसाला उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक होने के कारण हम मसालों की भूमि के रूप में भी जाना जाता है।